विचार बिन्दु

सैकड़ों हाथों से इकट्ठा करो और हजारों हाथों से बांटो। –अथर्ववेद

एआई से टेक्नोलॉजिकल बेरोज़गारी की चिंता

मानव सभ्यता के इतिहास में हर तकनीकी परिवर्तन अपने साथ नई संभावनाएं लाया है तो साथ में नये भय भी लेकर आया है। इसी कड़ी में एआई–आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस–इस समय की सबसे बड़ी बहस का केंद्र बना हुआ है। एक तरफ इसे अर्थव्यवस्था को तेज़ बनाने, उत्पादकता बढ़ाने और जीवन को आसान करने वाली क्रांतिकारी शक्ति माना जा रहा है, तो दूसरी तरफ इसके कारण बड़े पैमाने पर रोजगार, खासकर तकनीकी क्षेत्र में लगे लोगों की नौकरियां, खत्म होने की आशंका भी व्यक्त की जा रही है। सवाल उठता है कि क्या एआई सचमुच टेक्नोलॉजिकल बेरोज़गारी ला देगा? या यह भय अतिरंजित है? टेक्नोलॉजिकल बेरोज़गारी के बारे में रिसर्च के बाद अध्ययनकर्ता हालांकि इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि आने वाले वर्षों में आम पेशेवर, या कहें प्रोफ़ेशनल, और उनके साथ मेज–कुर्सी पर बैठ काम करने वाले व्हाइट–कॉलर वर्कर, के लिए नौकरियां कम हो जाएंगी। मगर दूसरी तरफ अनेक लोग टेक्नोलॉजिकल बेरोज़गारी की बात को सिरे से ही खारिज़ करते हैं। वे ज़ोर देकर कहते हैं कि उनका काम मशीन कभी नहीं कर सकती। वे कहते हैं कि इंसानों की जगह लेने वाली नई टेक्नोलॉजी से आसन्न खतरे बरसों से हमेशा बढ़ा–चढ़ाकर बताए जाते रहे हैं। वास्तव में इस बात की अधिक संभावना है कि सभी तरह की नई–नई नौकरियां इन कथित डिसरप्टिव टेक्नोलॉजी की वजह से सामने आएंगी और फलेंगी–फूलेंगी। तकनीकी बेरोज़गारी का विचार नया नहीं है। उन्नीसवीं सदी में जब स्वचालित मशीनें आईं, तब मजदूरों को लगा था कि मशीनें उनकी जगह ले लेंगी। इसी तरह कम्प्यूटर के आगमन पर भी कहा गया था कि कार्यालयों की नौकरियां समाप्त हो जाएंगी। देश में बैंकों के कंप्यूटरीकरण के शुरुआती दौर में कर्मचारी यूनियनों के जबरदस्त विरोध को भी सबने देखा है। लेकिन हुआ क्या? नौकरियों के स्वरूप बदल गये। टाइपिस्ट कम हुए, डेटा एनालिस्ट बढ़े, फाइलों की जगह सॉफ्टवेयर आए। टेलीफोन ऑपरेटर खत्म हुए, कॉल सेंटर उद्योग खड़ा हो गया। इतिहास बताता है कि तकनीक नौकरियां छीनती भी है और पैदा भी करती है। सवाल यह है कि एआई के मामले में यह संतुलन किस दिशा में झुकेगा? यह सही है कि एआई पहले के ऑटोमेशन से अलग है। यह सिर्फ दोहराए जाने वाले कार्य नहीं, बल्कि निर्णय–आधारित, बौद्धिक और रचनात्मक कार्य भी कर सकता है। जैसे कंपनियां ग्राहक सेवा के लिए चैटबॉट इस्तेमाल करने लगी हैं। पत्रकारिता में समाचार संकलन और प्राथमिक ड्राफ्ट तैयार करने का काम एआई कर रहा है। मेडिकल डायग्नोस्टिक्स में एक्स–रे से कैंसर तक की पहचान एआई तेजी से सीख रहा है। अकाउंटिंग, कोडिंग, मार्केटिंग कंटेंट–सब जगह एआई इंसानों के काम की नकल कर रहा है। इसी से यह आशंका पैदा होती है कि इस बार टेक्नोलॉजी सिर्फ हाथों का नहीं, दिमाग का भी विकल्प बन रही है।

एआई के कारण लाखों नौकरियाँ 'कम' होने का खतरा जरूर वास्तविक है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे हमेशा के लिए खत्म हो जाएंगी। एआई आमतौर पर 'आंशिक ऑटोमेशन' करता है, पूर्ण प्रतिस्थापन नहीं। एक डॉक्टर की जगह एआई नहीं ले सकता, लेकिन डॉक्टर की क्षमता जरूर बढ़ा देता है। एआई एक पत्रकार की जगह नहीं लेता, लेकिन पत्रकार की जांच को तेज और लेख का मसौदा बनाना सरल कर देता है। इस प्रकार ज्यादातर पेशों में एआई सहायक बनता है, विकल्प नहीं। हम यह भी देख रहे हैं कि एआई के कारण नई नौकरियों की भूमिकाएं भी तैयार हो रही हैं, जैसे 'एआई ट्रेनर', 'प्रॉम्प्ट इंजीनियर','डेटा क्यूरेटर', 'एआई एथिक्स ऑफिसर', 'एआई–एसिस्टेड क्रिएटिव कंटेंट डेवलपर', 'साइबर सिक्योरिटी एनालिस्ट', 'मानव–एआई इंटरैक्शन डिजाइनर' आदि। कई विशेषज्ञ तो यहां तक मानते हैं कि जिन नौकरियों के नाम आज हमें पता भी नहीं, वे अगले दस वर्षों में उसी तरह मुख्यधारा की बन जाएंगी जिस प्रकार इंटरनेट आने पर 'सोशल मीडिया मैनेजर' की नई नौकरियां पैदा हो गई है। इसकी कल्पना पहले नहीं की जा सकती थी। वास्तव में एआई एक उद्योग बन रहा है, और नौकरी प्रदाता भी। जैसे सॉफ्टवेयर उद्योग ने लाखों नौकरियां दीं है, वैसे ही एआई 'क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर', 'मॉडल ट्रेनिंग', 'हार्डवेयर डिज़ाइन', 'डेटा सेंटर निर्माण' आदि क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करेगा। तब सवाल उठता है कि कौन–सी नौकरियां सबसे ज़्यादा खतरे में हैं? इसका जवाब है दोहराव वाले रूटीन जॉब्स, डेटा एंट्री, कॉल सेंटर स्क्रिप्टेड भूमिकाएं, बैक अकाउंटिंग, स्टैंडर्ड रिपोर्ट लेखन जैसे काम एआई द्वारा तेजी से हो रहे हैं। निचले स्तर की विश्लेषणात्मक नौकरियों को लें तो बेसिक रिसर्च, प्राथमिक स्तर का कोडिंग, कंटेंट जेनरेशन, एंट्री–लेवल लीगल ड्राफ्टिंग जैसे कामों को एआई तेज़ और सस्ता बना देता है। ऐसे पेशे जहां दक्षता ज्यादा लेकिन मानवीय निर्णय कम होता है, जैसे ट्रांसक्रिप्शन, अनुवाद, ग्राहक चैट सपोर्ट, डिलीवरी–ऑप्टिमाइजेशन आदि में भारी बदलाव दिख रहा है। फिर भी अभी तक एआई की सीमाएं भी हैं। इसलिए कुछ नौकरियां स्वाभाविक रूप से सुरक्षित या कम खतरे में हैं। मानवीय संवेदनाओं वाली नौकरियां, मनोचिकित्सा, शिक्षण, सामाजिक कार्य, नेतृत्व और प्रबंधन, और पत्रकारिता का फील्ड रिपोर्टिंग का भाग आदि को खतरा नहीं है। एआई सहानुभूति नहीं सीख सकता इसलिए उच्च–स्तरीय रचनात्मकता, फिल्म निर्देशन, लेखक, कलाकार, संगीतकार, रणनीतिक मार्केटिंग में एआई सहायक बन सकता है, निर्माता नहीं। इसी प्रकार कुशल श्रम – स्किल्ड लेबर –श्रेणी में भी इलेक्ट्रीशियन, मैकेनिक, प्लम्बर, निर्माण कार्य, वाहन रिपेयर, के क्षेत्र पूर्णतः ऑटोमेट नहीं हो सकते। उद्यमी, वरिष्ठ प्रशासक, नीतिनिर्माता का भी विकल्प एआई नहींहो सकता। एआई से प्रोफेशन के अलावा, दूसरे लोग भी परेशान हैं। मूवी और टीवी इंडस्ट्री में, उन स्टूडियो के विरोध में हाई–प्रोफाइल इंडस्ट्रियल एक्शन हुए हैं, जिनसे उम्मीद की जाती है कि वे एआई से वह काम लेंगे जो पहले पेड एक्टर, एक्ट्रेस और स्क्रीनराइटर करते थे। अब फिल्म निर्माताओं को अपना लवाज़मा लेकर प्राकृतिक या ऐतिहासिक स्थानों पर नहीं जाना पड़ता। अब यंत्र तकनीक छोटे से कमरे में वे दृश्य बना देती है। लेकिन एआई हाइवे पर ढाबों की लोकेशन बताया सकता है लेकिन खाने पीनी के स्थानों की जगह नहीं ले सकता, जहां मानव काम करते हैं। राह में गाड़ियों के पंचर बनाने वाले या मरम्मत करने वाले मिस्त्रियों की जगह एआई नहीं ले सकता।

> **एआई सहानुभूति नहीं सीख सकता इसलिए उच्च-स्तरीय रचनात्मकता, फिल्म निर्देशन, लेखक, कलाकार, संगीतकार, रणनीतिक मार्केटिंग में एआई सहायक बन सकता है, निर्माता नहीं। इसी प्रकार कुशल श्रम - स्किल्ड लेबर - श्रेणी में भी इलेक्ट्रीशियन, मैकेनिक, प्लम्बर, निर्माण कार्य, वाहन रिपेयर, के क्षेत्र पूर्णतः ऑटोमेट नहीं हो सकते। उद्यमी, वरिष्ठ प्रशासक, नीतिनिर्माता का भी विकल्प एआई नहीं हो सकता।**

ऐसा माना जाता है कि भारत में एआई का प्रभाव पश्चिमी देशों से अलग होगा, क्योंकि भारत में सेवा क्षेत्र विशाल है। आईटी, बीपीओ, कस्टमर सपोर्ट जैसे सभी सेक्टर एआई से प्रभावित होंगे लेकिन साथ ही नए कौशलों की मांग भी बढ़ेगी। यहां की जनसंख्या युवा है। युवा जल्दी स्किल सीख लेते हैं। इसलिए मशीन लर्निंग, डेटा एनालिसिस, एआई कंटेंट डिजाइन, और डिजिटल उद्यमिता जैसे एआई कौशल के लिए भारत में बड़ी संभावनाएं हैं। हिंदी और भारतीय भाषाओं के लिए एआई का उभार हो रहा है। स्थानीय भाषा आधारित एआई सेवाएं, जैसे कृषि सलाह, हेल्थकेयर चैटबॉट, सरकारी सेवा नेविगेशन, डिजिटल शिक्षानई–नई नौकरियां पैदा करेंगी। भारत में ऑटोमेशन महंगा और श्रम सस्ता है। इस कारण कई उद्योगों में मानवीय श्रम पूरी तरह खत्म नहीं हो पाएगा। असली खतरा बेरोज़गारी से ज्यादा 'कौशल–असमानता' का है। एआई का डर कौशल असमानता में अधिक वास्तविक है। ऐसी स्थिति बनेगी कि जो लोग नए कौशल सीखेंगे वे आगे निकल जाएंगे तथा जो लोग पुराने ढर्रे पर टिके रहेंगे वे पीछे छूट जाएंगे। यह असमानता आय में गहरी खाई पैदा कर सकती है। असली चुनौती एआई युग के लिए लोगों को तैयार करने की है, न कि एआई को रोकने की। इसके लिए शिक्षा प्रणाली में बड़ा सुधार लाना होगा। स्कूलों और कॉलेजों में एआई साक्षरता, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और उद्यमिता पर विशेष जोर देना होगा। कर्मचारियों का री–स्किलिंग कार्यक्रम चलाना होगा ताकि वे अपने को एआई–समर्थित भूमिकाओं में बदल सकें। इसलिए ज़रूरी है–हम तकनीक से डरें नहीं, उसे अपनाएं, खुद को नया कौशल दें, और भविष्य की अर्थव्यवस्था में अपनी जगह खुद बनाएं। यदि हम समय रहते सही दिशा चुन लें तो एआई का युग मानवता का प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि साझेदार बन सकता है। नौकरियां तकनीक से नहीं, जड़ता से खत्म होती हैं। किन्तु भारतीय नीति निर्माता टेक्नोलॉजी से जुड़ी बेरोज़गारी की बढ़ती चुनौती को सीधे तौर पर नहीं देख पा रहे हैं। वे समय पर छोड़ देना चाहते हैं। एआई के कर्मचारियों की जगह लेने की आशंका को पॉलिसी बनाने वालों ने ज़्यादातर बहुत मुश्किल मुद्दे के तौर पर रखा है। हो सकता है आज इसका जवाब हमारे पास न हो, लेकिन इस मुद्दे पर ईमानदारी से, सबके सामने, व्यवस्थित तरीके से समस्याओं का अंदाज़ा लगाकर कदम उठाने ही पड़ेंगे। इस बारे में बात न करना निश्चित रूप से सबसे ज़िम्मेदारी वाला रास्ता नहीं है। सरकारों को एआई के सफल इस्तेमाल से होने वाली गंभीर असमानताओं को समय पर पहचानने और उनका सामना करने के लिये अपने को तैयार करना होगा। लेकिन इस बात पर खुलकर आम बहस करने के की तैयारी कहीं नजर नहीं आती। उच्च शिक्षा के संस्थानों में भी नहीं। एआई से आने वाली संपन्नता का समाज में समानता से वितरण के लिये क्या किया जाय इस बारे में नीति निर्माता अनभिज्ञ हैं। नीति निर्माता इस आसन्न असमानता की चुनौती से निबटने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं हैं। एआई इंसानों की 'जगह' नहीं लेगा, लेकिन इंसानों की 'तैयारी' की कमी उनकी जगह छीन सकती है। तकनीक हमेशा विकसित होती रहेगी–लेकिन मनुष्य का योगदान, कौशल और अनुकूलन क्षमता ही तय करेगी कि वह आगे बढ़ेगा या पिछड़ जाएगा। इसलिए एआई से जुड़ी तकनीकी बेरोज़गारी की आशंका एक सच्चाई है, लेकिन यह भय का विषय नहीं, बल्कि तैयारी का विषय है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

यूनिफॉर्म सिविल कोड – "मुल्ला का इस्लाम" के स्थान पर "अल्लाह का इस्लाम" का मार्ग प्रशस्त होगा

सूर्य प्रताप सिंह राजावत

आज पूरे देश में यूनिफॉर्म सिविल कोड पर चर्चा चल रही है। यूनिफॉर्म सिविल कोड पर चर्चा इतनी पुरानी है जितना कि हमारा संविधान। संविधान बनाते समय संविधान सभा में इस विषय पर अनुच्छेद 35 के तहत चर्चा हुई थी जो कि आज के संविधान में अनुच्छेद 44 के तहत है। यह बड़े आश्चर्य और अचरज की बात है कि जो दुविधा संदेह संविधान को बनाते समय यूनिफॉर्म सिविल कोड के बारे में थे वही उसी तरह की भ्रांति आज भी हमारे समाज में फैली हुई है। लॉ कमीशन ऑफ इंडिया 2018 की रिपोर्ट कंसल्टेशन पेपर ऑन रिफॉर्म ऑफ फैमिली लॉ मैं इसका उल्लेख है कि संविधान सभा ने किन कारणों से यूनिफॉर्म सिविल कोड को मौलिक अधिकारों में नहीं जोड़ा। उसमें पहला संदेह यह था कि क्या यूनिफॉर्म सिविल कोड और पर्सनल लॉ समानांतर रूप से लागू होंगे ? या यूनिफॉर्म सिविल कोड पूरी तरह से पर्सनल लॉ को हटा देगा ? इसी के साथ यूनिफॉर्म सिविल कोड को माइनॉरिटी कम्युनिटी के पर्सनल लॉ या उनके धार्मिक कानूनों से भी जोड़कर भी देखा गया ? परंतु संविधान सभा की डिबेट्स को पढ़ने पर यह स्पष्ट होता है कि कहीं भी यूनिफॉर्म सिविल कोड के नाम पर धर्म के मौलिक प्रावधानों से कोम्प्रोमाईज़ करने की कोशिश नहीं की गई थी। और ना ही यूनिफॉर्म सिविल कोड का अर्थ है किसी की भी मौलिक धार्मिक भावनाओं को आहत करना। कोई भी सभ्य समाज या लोकतंत्र कभी भी किसी भी समुदाय की मौलिक धार्मिक आस्थाओं को आहत नहीं करेगा।

यूनिफॉर्म सिविल कोड की बहस में इस मुद्दे को समझने के लिए हमें सर्वोच्च न्यायालय द्वारा शाहबानो केस में पारित निर्णय को समझना होगा। शाहबानो केस में भरण पोषण की व्याख्या माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने कुरान में अंकित विभिन्न आयतों को देखकर की गई थी –

आयत 240–241: तुम में से जो लोग मर जाएंगे और अपने पीछे पत्नियां छोड़ जाएंगे, उन्हें इस आशय की वसीयत करनी चाहिए कि उन्हें एक वर्ष का भरण–पोषण प्रदान किया जाए और उन्हें उनके घरों से न निकाला जाए। परन्तु यदि वे अपनी इच्छा से अपना घर छोड़ दें, तो जो कुछ वे अपने लिये उचित रीति से चुन लें उसके लिये तुम उत्तरदायी न होगे; अल्लाह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ है। इसी प्रकार, तलाकशुदा महिलाओं को भी ज्ञात उचित मानक के अनुसार कुछ दिया जाना चाहिए। यह अल्लाह से डरने वाले लोगों पर एक दायित्व है।

आयत 242: "इस प्रकार अल्लाह आपके लिए अपनी आज्ञाएँ स्पष्ट करता है: यह उम्मीद की जाती है कि आप अपने सामान्य ज्ञान का उपयोग करेंगे।"

धर्मग्रंथों का अध्ययन करने के बाद माननीय न्यायालय ने निर्णित किया "इन आयतों में कोई संदेह नहीं है कि कुरान मुस्लिम पति पर तलाकशुदा पत्नी के लिए भरण–पोषण का प्रावधान करने या प्रदान करने का दायित्व डालता है।" (पैरा 25)

इसी प्रकार तीन तलाक को भी माननीय सुप्रीम कोर्ट नै धर्मठान्थ के अनुसार अवैध घोषित किया।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्सनल लॉ (निजी कानून) से स्पष्ट हो जाता है –

1) तुर्किये : जीवनसाथी के जीवित होने पर न्यायालय द्वारा एक से अधिक शादी (polygamy) अवैध घोषित किया जा सकता है।

2) पाकिस्तान : एक से अधिक शादी के लिये समुचित प्राधिकारी से अनुमति लिया जाना अनिवार्य है।

3) ईरान : कोई भी व्यक्ति बिना न्यायालय अनुमति के एक से अधिक शादी नहीं कर सकता।

4) ईजिप्ट, जॉर्डन, मोरक्को, सीरिया में इसी प्रकार एक से अधिक शादी के नियमों के अधीन प्रावधान है।

5) ट्यूनिशिया : एक से अधिक शादी पूर्णतया प्रतिबंधित है।

6) ईरान, अलजीरिया, इण्डोनेशिया, मलेशिया में विवाह का पंजीकरण कराया जाना अनिवार्य है।

भारत में गोवा राज्य में पुर्तगाल शासन से ही यूनिफॉर्म सिविल कोड लागू है परन्तु गोवा में रह रहे मुसलमानों ने अपनी पहचान और अपनी संस्कृति को बरकरार रखा है। इसी प्रकार शादी के लिए बांग्लादेश में पुरुष की आयु 21 और महिला की आयु 18 वर्ष से अधिक हो पंजीकरण के लिए वैध मन गया है। यूनाइटेड किंगडम में सभी नागरिको के लिए पंजीकरण कराना अनिवार्य है। महिलाओं के अधिकार, संवैधानिक नैतिकता, मानव अधिकार, सेकुलरिज्म, जेंडर समानता, आदि मूल्यों और सिद्धांत्तों के आधार पर सार्थक संवाद से मुल्ला का इस्लाम के स्थान पर अल्लाह का इस्लाम का मार्ग प्रशस्त होगा।

–सूर्य प्रताप सिंह राजावत,
अधिवक्ता राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर

बच्चों के विकास में खेलों का महत्त्व

प्रो. कैलाश सोडाणी

वर्तमान समय में मोबाइल, माता–पिता की अपेक्षाएं और सुविधायुक्त जीवन में शारीरिक श्रम से बचने की प्रवृत्ति से बच्चे खेलकूद की दुनिया से दूर होते जा रहे हैं। ज्यादा नहीं, 20–25 वर्ष पूर्व तक स्कूल और कॉलेज के खेल के मैदान विद्यार्थियों की उपस्थिति से सराबोर रहते थे। फुटबॉल, हॉकी, बास्केटबाल, वॉलीबाल आदि सभी ग्राउंड्स पर बड़ी रौनक रहती थी। खेलने के अवसर के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। आज खेल के मैदानों पर सन्नाटा छा रहा है। मैदान खाली पड़े हैं, खिलाड़ी नदारद है।

बच्चे औसतन 4–5 घंटे रोज मोबाइल में डूबे रहते हैं। खेलकूद के समय को मोबाइल ने ले लिया है। शोध यह कहता है कि खेलों से ही शारीरिक एवं मानसिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। खेलों के माध्यम से शारीरिक श्रम हो जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। श्रम के अभाव में शरीर बीमारियों का अजायबघर बन जाता है। यह सब जानते हुए भी हम मोबाइल के शिकार होते जा रहे हैं।

आज के युवा गुरु की जगह गूगल को सम्मान देने लग गए हैं। ज्ञान के अमृत को क्लासरूम के स्थान पर व्हाट्सएप और ट्विटर पर तलाश रहे है। तभी तो इनके पास जानकारी ज्यादा है, लेकिन समझदारी कम होती जा रही है। हमारी सुस्ती भारत की युवा पीढ़ी को डिजिटल सामंतों के इशारों पर चलने के लिये प्रेरित कर रही है। बात केवल खेलकूद तक सीमित नहीं रहेगी – अपितु ये लोग तो हमारी पूरी जीवन पद्धति को ही बदल कर रख देंगे। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, फेसबुक, एप्पल जैसे विदेशी मठाधीश सूचना औद्योगिक के इस महाप्रसाद को योजनापूर्वक एक षड्यंत्र के तहत फ्री में बाँट रहे हैं। यही कारण है कि भारत में आज व्हाट्सएप के 85 करोड़, इंस्ट्राग्राम के 48 करोड़ एवं फेसबुक के 38 करोड़ यूजर्स हो गए हैं।

भारत में 18 वर्ष से कम उम्र के 45 करोड़ बच्चों को सोशल मीडिया से दूर रखना होगा। ऑस्ट्रेलिया में 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा दिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ सहित अनेक राष्ट्रों ने इस प्रतिबंध का स्वागत किया। भारत को भी बच्चों को डिजिटल प्रदूषण से बचाने के लिए यथाशीघ्र कानून तो बनाना ही पड़ेगा।

हमारे जीवन में सबसे अमूल्य तोहफा है 'समय'। मोबाइल हमसे हमारा यही मूल्यवान तोहफा ही तो छीन रहा है। खेलकूद का समय तो सोशल मीडिया निगल चुका है। अब तो परिवारजन और मित्रों के साथ बिताए जाने वाले समय को छिनने की तैयारी है। रोज घण्टों मोबाइल पर परोसे जाने वाली सामग्री को पढ़ते–पढ़ते हमारी सोच और मानसिकता ही कमजोर होती जा रही है।

आजकल बच्चें भी एक या दो ही होते हैं इसलिए मां–बाप की सारी अपेक्षाएं उन्हीं से होती है। बच्चा डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर या कलक्टर बनना ही चाहिए। इसके लिए बच्चों को पढ़ना ही पढ़ना है। माता–पिता खेलकूद को समय की बर्बादी समझने लग गये हैं। इसलिए पहले स्कूल फिर कोचिंग। मेरे छात्र जीवन के समय कोचिंग जाना शर्म की बात होती थी। परंतु आज यह गर्व का विषय बन चुका है। बच्चों की दिनचर्या से खेलकूद का कालांश ही हटा दिया गया है। आजकल प्राइवेट विद्यालयों ने अपना समय प्रातः 8 बजे से अपरान्ह 2 बजे कर दिया है। खेलकूद के हिसाब से यह बिल्कुल गलत समय है। अपरान्ह 2बजे तो खेल का समय ही नहीं होता है। 2 बजे घर जाकर 5 बजे खेलने के लिए पुनः विद्यालय आना संभव नहीं है। विद्यालयों का आदर्श समय होना चाहिए प्रातः 10 बजे से सांय 5 बजे। जिससे 5 बजे पश्चात वह खेल कर ही घर जाएगा। इस संबंध में सरकारी विद्यालयों की स्थिति अच्छी है, जिनका समय प्रायः 10 से 5 ही होता है एवं खेलकूद के लिए पर्याप्त जगह होती है। मेरा छात्र जीवन भी राजकीय विद्यालय एवं महाविद्यालय में व्यतीत हुआ, परिणामस्वरुप मुझे खेलकूद का पूरा लाभ हमेशा प्राप्त होता रहा।

बच्चों की सुविधा के लिए स्कूल एवं कॉलेज शहर के मध्य बन रहे हैं, जहां भूमि की सीमित उपलब्धता के कारण खेलकूद के लिए जगह ही नहीं मिल पाती है। भवन एवं क्लासरूम तो आधुनिक सुविधाओं से युक्त बन जाते हैं परन्तु बच्चों को फुटबॉल–वॉलीबॉल खेलने की सुविधा नहीं दे पाते हैं। आज की पीढ़ी को घर एवं स्कूल में उपलब्ध सुविधाओं के कारण उनका शारीरिक श्रम से मोह भंग हो गया है। खेलेंगे तो दौड़ेंगे, गिरेंगे, उठेंगे, भागेंगे, पसीना भी आएगा, वो इन्हें पसंद नहीं है। वातानुकूलित कक्ष में मोबाइल से चिपक कर बैठने में इन्हें बड़ा सुकून मिलता है।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा तीन से सात साल तक के बच्चों पर किए गए शोध से निष्कर्ष सामने आया है कि जो बच्चे अपने हम उम्र बच्चों के साथ खेलते हैं उनका मानसिक एवं शारीरिक विकास तुलनात्मक रूप से ज्यादा अच्छा होता है।खेलों से अनुशासन में रहना सीखता है। समन्वय एवं नैतृत्व क्षमता का विकास होता है। इसलिए आज की युवा पीढ़ी को खेल के मैदानों पर पुनः रौनक पैदा करनी होगी। खेलकूद को अपनी जीवन शैली का आवश्यक अंग बनाना होगा। किताबों से बाहर की दुनिया का भी अध्ययन करना होगा।

–प्रो. कैलाश सोडाणी,
पूर्व कुलगुरु, वर्धमान महावीर खुला वि.वि, कोटा

लगातार बढ़ती गर्मी के बीच अजमेर शहर में कई जगह पेयजल संकट गहराया

- **लोहाखान स्थित कल्पवृक्ष वाली गली की महिलाओं ने जलदाय कार्यालय में प्रदर्शन किया**
- **महिलाओं ने आरोप लगाया कि क्षेत्र में बेहद कम प्रेशर से पानी की सप्लाई हो रही है, जिसके कारण घरों तक पर्याप्त पानी नहीं पहुंच पा रहा है**

अजमेर, (निसं)। शहर में लगातार बढ़ती गर्मी के बीच पेयजल संकट भी गहराता जा रहा है। कई इलाकों में लोगों को पर्याप्त पानी नहीं मिल पा रहा है, जिससे आमजन को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इसी कड़ी में मंगलवार को लोहाखान स्थित कल्पवृक्ष वाली गली की महिलाओं का सब्र टूट गया और बड़ी संख्या में महिलाएं एकत्रित होकर जलदाय विभाग कार्यालय पहुंचीं। क्षेत्रवासी चंदा देवी व आंजना देवी सहित अन्य महिलाओं ने जलदाय विभाग के अधिकारियों का घेराव करते हुए जोरदार विरोध प्रदर्शन किया।

महिलाओं ने आरोप लगाया कि क्षेत्र में बेहद कम प्रेशर से पानी की सप्लाई हो रही है, जिसके कारण घरों तक पर्याप्त पानी नहीं पहुंच पा रहा है। कई परिवारों को पीने के पानी के लिए भी परेशान होना पड़ रहा है। प्रदर्शन कर रही महिलाओं ने बताया कि जलापूर्ति का कोई निश्चित समय नहीं है। कभी सुबह तो कभी देर रात पानी छोड़ा जाता है, जिससे लोगों को भारी दिक्कत उठानी पड़ती है। खासकर मजदूरी करने वाले परिवारों को सबसे अधिक परेशानी हो रही है, क्योंकि वे दिनभर काम पर चले जाते हैं और अनियमित समय पर आने वाला पानी भर नहीं पाते। महिलाओं ने कहा कि कई बार शिकायत करने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं किया जा रहा है। गर्मी के इस मौसम में पानी की कमी ने लोगों का जनजीवन प्रभावित कर दिया है। क्षेत्रवासियों ने जलदाय विभाग से नियमित समय पर पर्याप्त प्रेशर के साथ पानी की सप्लाई सुनिश्चित करने की मांग की। प्रदर्शन के दौरान महिलाओं ने चेतावनी दी कि यदि जल्द समस्या का समाधान नहीं किया गया तो क्षेत्रवासी बड़ा आंदोलन करने को मजबूर होंगे। वहीं जलदाय विभाग के अधिकारियों ने महिलाओं को समस्या के शीघ्र समाधान का आश्वासन दिया।

भीलवाड़ा के शंभूगढ़ में 32 वर्ष से संचालित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को क्रमोन्नत करने की मांग

भीलवाड़ा, (निसं)। आसींद विधानसभा क्षेत्र के तीसरे सबसे बड़े कस्बे शंभूगढ़ में चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार और पिछले 32 वर्षों से संचालित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में क्रमोन्नत करने की मांग को लेकर मंगलवार को ग्रामीणों का आक्रोश फूट पड़ा। क्षेत्र की लंबे समय से चली आ रही इस मांग को लेकर बड़ी संख्या में शंभूगढ़ के कस्बे वासी गुलाबपुरा उपखंड कार्यालय पहुंचे। यहां ग्रामीणों ने अपनी मांगों के समर्थन में जमकर नारेबाजी की और प्रदर्शन किया। इसके बाद ग्रामीणों के एक शिष्टमंडल ने गुलाबपुरा उपखंड अधिकारी दिव्य राज सिंह को मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन सौंपा।

उपखंड अधिकारी को सौंपे गए ज्ञापन में ग्रामीणों ने बताया कि शंभूगढ़ क्षेत्र का एक प्रमुख और तेजी से बढ़ती आबादी वाला कस्बा है। वर्तमान में यहाँ पंचायत समिति मुख्यालय, उप तहसील कार्यालय, पुलिस थाना, बैंक ऑफ बड़ौदा की शाखा और नवसृजित अजमेर विद्युत वितरण निगम का एईएन कार्यालय जैसे कई महत्वपूर्ण प्रशासनिक विभाग सफलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं। इन सभी बड़े कार्यालयों के होने के कारण प्रतिदिन हजारों की संख्या में आस–पास के ग्रामीणों का यहाँ आना–जाना रहता है। इसके बावजूद कस्बे की चिकित्सा व्यवस्था पिछले तीन दशकों से एक अदद के भरोसे चल रही है, जो वर्तमान आबादी के लिहाज से नाकाफी साबित हो रही है। कस्बे वासियों ने रोष व्यक्त करते हुए कहा कि शंभूगढ़ में पर्याप्त चिकित्सा संसाधन और विशेषज्ञ डॉक्टरों के न होने के कारण गंभीर बीमारियों या आपातकालीन स्थिति में मरीजों को आसींद, गुलाबपुरा या जिला मुख्यालय भीलवाड़ा की दौड़ लगानी पड़ती है। यदि यहाँ की प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में क्रमोन्नत कर दिया जाए, तो शंभूगढ़ सहित आस–पास की दर्जनों ग्राम पंचायतों के हजारों लोगों को स्थानीय स्तर पर ही बेहतर इलाज मिल सकेगा। ज्ञापन के माध्यम से क्षेत्रवासियों ने प्रदेश सरकार से मांग की है कि जनहित और क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए शंभूगढ़ को अतिशीघ्र सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में क्रमोन्नत करने की स्वीकृति जारी की जाए। प्रदर्शन में शामिल प्रबुद्ध नागरिकों और ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि इस बार भी शंभूगढ़ की इस 32 साल पुरानी वाजिब मांग की अनदेखी की गई, तो समस्त क्षेत्रवासी उग्र आंदोलन का रास्ता अख्तियार करने को मजबूर होंगे, जिसकी समस्त जिम्मेदारी प्रशासन की होगी। इस दौरान शंभूगढ़ कस्बे के कई जनप्रतिनिधि, व्यापार मंडल के पदाधिकारी और बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 27 मई, 2026

प्रथम ज्येष्ठ मास (अधिक), शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2083, हस्त नक्षत्र प्रातः 5:57 तक, व्यतिपात योग रात्रि 3:25 तक, विष्टि करण प्रातः 6:22 तक, चन्द्रमा आज सायं 7:00 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से प्रातः 5:57 तक है। रवियोग और कुमार योग प्रातः 5:57 तक है। राजयोग प्रातः 6:22 से सूर्योदय तक है। आज भद्रा प्रातः 6:22 तक रहेगी। आज कमला (पुरूषोत्तम) एकादशी व्रत, व्यतिपात पुण्यं है। आज एकादशी तिथि में वृद्धि हुई है। आज उन्मीलिनी महाद्वादशी है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:01 तक, शुभ 10:42 से 12:24 तक, चर 3:47 से 5:28 तक, लाभ 5:28 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:09

मेष
परिवार में चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

वृष
परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। घर–गृहस्थी के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है।

धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा और परिवार में उत्सव जैसा माहौल बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।